खण्ड-9, अंक-1, वर्ष-2021, मु0प्र0 118-125
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v9i1.22
SJIF (2021) : 7.247

शहरीकरण एवं मानव आवास : एक चुनौती

रश्मि तिवारी
वनस्पति विज्ञान विभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मेमोरियल डिग्री कॉलेज, लखनऊ–226 017, उ0प्र0, भारत
rashmitewary@hotmail.com

प्राप्ति तिथि–31.08.2021, स्वीकृति तिथि–20.10.2021

सार– पिछले कुछ वर्षों में (sustainable) चिरस्थायी एवं प्रतिपालक शब्द अत्यधिक प्रचलित हो गया है। प्रारम्भिक दौर में इसका प्रयोग पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिक जैसे विषयों तथा उनसे जुड़ी समस्याओं तक ही केंद्रित था। परंतु आज यह शब्द सामाजिक, आर्थिक यहाँ तक कि जीवन के प्रत्येक पक्ष के विकास में भी प्रयुक्त होने लगा है। शहरीकरण के कारण मानव आवास एवं बस्तियों का निर्माण एक समस्या बन गई है, इस तीव्रगामी चुनौती को प्राथमिकता देते हुए, समय रहते यह समझना आवश्यक हो गया है, कि मानव अपने जीवनोपयोगी साधनों का प्रयोग करते हुए सम्पन्न जीवन किस तरह जिए? विश्व में शहरीकरण की दर अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है, जो शहरी जीवन शैली पर अनाधिकृत दबाव डाल रही है। अतः आज की आवश्यकता है प्रकृति संरक्षण के साथ ही साथ सामाजिक संतुलन की, जिसका क्रियान्वयन सकारात्मक सोच, सार्वजनिक सहयोग एवं उदार–निष्पक्ष सरकारी नीतियों द्वारा ही संभव है।

बीज शब्द– शहरीकरण, मानव आवास, प्रवास, परिवर्तन, चुनौती, प्रबन्धन

Urbanization and human residence : a challenge

Rashmi Tewary
Department of Botany, Dr. Rajendra Prasad Memorial Degree College Lucknow-226 017, U.P., India
rashmitewary@hotmail.com

Abstract- One of the more fashionable terms to have emerged over the past few years is “sustainability". The term has been applied in all sorts of contexts that initially concentrated on the environmental & ecological issues, but now it includes the social, economic and even that of overall development. It also applies to the human settlements, be it cities, towns or villages etc. The world's urbanization rate is unprecedented with the migration of millions of people to cities and urban centers bringing enormous pressure in various directions of human society. It is today's need to bring innovation and opportunities that hold the transformative power of positive change and inclusion.The challenge of urbanization is further exacerbated by previously rural human settlements that are rapidly transforming into urban centres and small towns subsequently growing into cities.

Key words- Urbanization, Human Settlements, Migration, Transformation, Challenge, Management

1. **परिचय–** विश्व में कृषिकी खोज के बाद शहरों का उदय कई बार, विभिन्न सभ्यताओं में हुआ, उनमें से कुछ प्रथम प्राचीन शहर आज के भारतीय उप महाद्वीप में खड़े हुए। किन्तु इन सभी सभ्यताओं और शहरों का समय के साथ पतन हुआ है। ऐसा माना जाता है की सिंधु घाटी की सभ्यता का विनाश न केवल बाहरी आक्रमणों के कारण हुआ, अपितु जलवायु परिवर्तन भी इसका एक प्रमुख कारण था। यह जानना आवश्यक है, कि वह कौन सी पर्यावरणीय, भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक हैं जो एक समाज के पतन का कारण बनते हैं। इस लेख में हम शहरों के चिरस्थायी विकास के विषय में कई ऐसे कारकों से अवगत होंगे। पिछले कुछ दिनों में घोषित हुई जलवायु परिवर्तन की रिपोर्ट में (The Intergovernmental Panel on Climate Change) इस बात की पुष्टि हुई है की दुनिया भर के कई तटीय भू–भाग आगामी 50 वर्षों में पानी में समाये होंगे। इसमें भारत के आर्थिक महत्व रखने वाले कई शहर जैसे मुंबई, चेन्नई, आदि, डूब चुके होंगे। कोविड–19 महामारी ने भारतीय गणतंत्र की सारी अक्षमताओं को अनावृत कर दिया है। ऐसे में यदि देशवासी जलवायु न्याय और चिरस्थायी विकास के लिए अपनी आवाज नहीं उठायेंगे, तो हमारे समाज का पतन निश्चित है।

वैश्वीकरण के उपरान्त शहरी विकास की अवधारणा समावेशी विकास की एक अनिवार्य शर्त बन गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में दुनिया की संभवतः आधी आबादी शहरों में रह रही है। वर्ष 2050 तक भारत की संभवतः 50 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में विस्थापित हो चुकी होगी। ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक संस्था के अध्ययन के अनुसार 2021 से 2050 के मध्य भारत के दस प्रमुख शहर

जनसंख्या के मामले में विश्व शीर्ष पटल पर होंगे। शहरी क्षेत्रों के भौतिक विस्तार जैसे–क्षेत्रफल एवं जनसँख्या का बढ़ना शहरीकरण कहलाता है, जो आज वैश्विक समस्या के रूप में दृष्टिगत है।

2. **स्वतंत्र भारत में शहरों का उदय**– स्वतंत्रता के बाद भारत ने गरीबी, बेरोजगारी एवं गतिहीन अर्थव्यवस्था का अनुभव किया। उस समय हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित कर अनेक स्वायत्तशासी एवं सरकारी संस्थानों की स्थापना कर भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की। 2010 की जनगणना के अनुसार दक्षिण एशिया का 69.9 प्रतिशत क्षेत्र जो ग्रामीण था, धीरे–धीरे शहरों के रूप में विकसित होता गया। इस दौरान भारत में सर्वाधिक शहरीकरण हुआ, 1901–1911 बीच यहाँ शहरी जनसंख्या में 14 गुना वृद्धि हुआ। शहरीकरण विकासशील राष्ट्र का अनिवार्य गुण है। परंतु भारत में हुए इस परिवर्तन में बिखराव, असमानता एवं असुरक्षा थी। नीचे दी गई **तालिका–1** में भारतीय उप महाद्वीप के शहरी इतिहास का विवरण दिया गया है।

तालिका–1

क्र0सं0	मानव सभ्यता का नाम	काल कब से	काल कब तक	विशेषताएँ	विलुप्त होने का कारण
1.	सिंधु घाटी की सभ्यता	3300 बी0सी0	1200 बी0सी0	मुख्य शहर मोहनजोदरों/हड़प्पा, लगभग 30000से 60000 आबादी	आर्यन आक्रमण/जलवायु परिवर्तन, सूखा, कृषि, व्यापार में कमी
2.	वैदिक काल	1500 बी0सी0	500 बी0सी0	कंधार, पाटलीपुत्र, नालंदा/वेदों की रचना एवं भाषा का विकास	संस्कृति, भाषा और राजनैतिक परिवर्तन
3.	मध्य काल	230 बी0सी0	120 ए0डी0	वर्ण व्यवस्था की मजबूती से स्थापना।	भ्रष्टाचारी नेता, ग्रहयुद्ध, वाह्य आदिवासी जनों का आक्रमण
4.	पूर्व मध्य काल	1206 बी0सी0	1526 ए0डी0	वर्ण एवं जातिगत वैमनस्य	स्वार्थ, न्यायहीनता, स्थानीय ताकतों का उदय
5.	मुग़ल काल	1526 ए0डी0	1558 ए0डी0	कला, संगीत एवं साहित्य का उत्थान। आपसी भाई चारा।	अनियंत्रित अर्थव्यवस्था, तकनीकों एवं वैज्ञानिक हथियारों का अभाव
6.	उपनिवेश काल	1510 ए0डी0	1961 ए0डी0	पराधीन जनसमुदाय, विवश शक्तिहीन समाज	राजनैतिक एवं आर्थिक पतन, शक्तिशाली स्वतंत्रता आंदोलन का उदय

विश्व बैंक के शोध के अनुसार चीन, इंडोनेशिया, नाइजीरिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत ही वह देश है जहाँ सबसे अधिक शहरीकरण हुआ। यही कारण है कि भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था एवं निजी व्यावसायिक संस्थानों का उदय हुआ। 1901 की जनगणना के अनुसार भारत की शहरी जनसंख्या जो लगभग 11.4 प्रतिशत थी, जो 2001 के आते–आते 28.53 प्रतिशत हो गई और आज 35 प्रतिशत है। 1971 में जहाँ 150 शहरों की आबादी एक लाख थी, अब ऐसे 500 शहर हैं। देश की शहरी आबादी 1901 में 107.5 करोड़ थी, जो 2011 में 125.03 करोड़ हो गई है। जनगणना की सूची में भारत दूसरे स्थान पर है। नीचे दी गई तालिका–2 में विश्व के विशाल शहरों की जनसंख्या का विवरण दिया गया है।

तालिका–2

क्र0सं0	शहर	देश	जनसंख्या (संयुक्त राष्ट्र संघ के 2018 के अनुमानानुसार)
1.	टोक्यो	जापान	37400068
2.	दिल्ली	भारत	28,514,000
3.	सिओल	दक्षिण कोरिया	25,674,800
4.	शंघाई	चीन	25,582,000
5.	साओ पाउलो	ब्राजील	21,650,000
6.	मेक्सिको सिटी	मेक्सिको	21,581,000
7.	काइरो	मिस्र	20,076,000
8.	मुंबई	भारत	19,980,000
9.	बीजिंग	चीन	19,618,000
10.	ढाका	बांगलादेश	19,578,000

बढ़ती जनसंख्या के आधार पर 1991 में महाराष्ट्र भारत का सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाला प्रदेश रहा, 2001 में तमिलनाडु दूसरे स्थान पर और 2011 में केरल तीसरे स्थान पर। महानगरों में मुंबई की तरफ हो रहे ग्रामीण पलायन एवं शहरी प्रवासन ने उस शहर की आबादी को 20 मिलियन कर दिया है, जो दिल्ली के बाद है जहाँ 28 मिलियन लोग रहते हैं। विश्व परिप्रेक्ष्य में दिल्ली वर्तमान में हो रहे शहरीकरण का साक्षी है जिसकी आबादी में 4.1 प्रतिशत की वृद्धि 2011 में देखने को मिली। भारत में लगभग 100 सर्वाधिक घनी आबादी वाले शहर हैं, जो उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास हैं। भारत के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की आबादी 4 करोड़ 70 लाख है, जो दुनिया का सबसे बड़ा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र है। नीचे दी गई तालिका–3 में विश्व की शहरी–ग्रामीण जनसंख्या के अनुपात का विवरण प्रदत्त है।

तालिका–3

शहरी / ग्रामीण जनसंख्या अनुपात (स्थानांतर / गमन की प्रक्रिया) Population Growth 1950-2000 (Millions added)							
क्र0सं0	देश / महाद्वीप	शहरी		ग्रामीण		योग	
		1950 . 1975	1975 . 2000	1950 . 1975	1975 . 2000	1950 . 1975	1975 . 2000
1.	अफ्रीका	70	209	114	203	184	412
2.	एशिया	383	801	535	613	918	1414

3.	मध्य एवं दक्षिण अमेरिका	129	269	32	28	161	297
4.	उत्तरी अमेरिका	76	75	.5	.15	71	60
5.	यूरोप	186	194	.31	.67	155	127
कुल	-	844	1548	645	762	1489	2310

कृषि क्षेत्र की भागेदारी भारत में निरंतर घट रही है, कारण सुविधाओं के अभाव में ग्रामीणों का शहर की ओर पलायन एवं प्रवासन इधर औद्योगिक क्रांति की वजह से जनजीवन की आर्थिक स्थिति में सुधार एवं आधुनिक आविष्कारों ने जीवन स्तर को सरल एवं सुविधाजनक बना दिया है। मानव आवास के विकास को दो प्रमुख पहलुओं में देखा जा सकता है भौतिक और दूसरा सामाजिक अतः इसके मुख्य घटक भी दो हैं– पहला मानव समूह और दूसरा प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग। मात्र घर, रास्ते, पानी, बिजली ही नहीं अपितु शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है। इसका वृहत आयाम जनसंख्या, रोजगार, योजना, सामाजिक सुरक्षा, प्रदूषण, स्वास्थ्य, शिक्षा को स्वयं में समेटे है। इन सभी दिशाओं की उन्नति से ही मानव का समग्र विकास संभव है। ऐसे विकास से ही मानव समाज को संपूर्णता प्रदान होगी। 2008 में पहली बार यह देखा गया कि विश्व की शहरी आबादी ग्रामीण आबादी से अधिक हो गयी है। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन था, जिसे बाद में शहरी सहस्राब्दी के नाम से जाना गया। सर्वेक्षण की रिपोर्ट यह भी दर्शा रही है कि 2050 तक गाँवों का विलुप्तिकरण हो जाएगा और विश्व में केवल शहरी परिवेश एवं संस्कृति ही दिखाई देगी। 2014 में दुनिया की 54 प्रतिशत जनसंख्या को शहरी कहा गया, जो अनुमानतः 2030 तक 60.4 प्रतिशत हो जाएगी। 2018 की एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 548 शहरों की जनसंख्या 1 मिलियन है, 2030 तक 706 शहर इस परिधि में आ जाएंगे ।

जिस तरह ग्रामीणों का पलायन हो रहा है, शहरों की मूलभूत व्यवस्था एवं आधारिक संरचना का संदोहन हो रहा है। लगभग 75 लाख ग्रामीण व्यक्ति प्रति वर्ष शहरों की तरफ आ रहा है। इसका प्रमुख कारण है कि शहर व्यापार, नव संस्कृति, विज्ञान, समाज एवं आर्थिक रूप से पूर्ण विकसित है। वह आज के युवा को सकारात्मक सोच के साथ नए अवसर प्रदान करता है। नीचे दी गई **तालिका–4** में विश्व में शहरी आबादी का प्रतिशत दर्शाया गया है।

तालिका–4

वर्ष	1750	1800	1850	1900	1950	1982	2001	2021
प्रतिशत	3	6	14	30	37	48	55	68

3. **भारतीय शहरों की विशिष्ट चुनौतियाँ**– भारतीय शहरों ने बहुत वीभत्स आपदाओं का सामना किया है । बाढ़, सूखा, ग्रीष्म लहर, शीत लहर, भूस्खलन, आदि प्राकृतिक आपदाएं भारत में सामान्य हो चली हैं और प्राकृतिक संपदा के असीमित संदोहन के चलते यह आपदाएं अत्यंत भीषण होती जा रही हैं। इन सभी विपदाओं में सरकारी असमर्थता स्पष्ट हो जाती है। इन विपदाओं के अलावा भारत के शहरों ने मूसलाधार वर्षा (मुंबई), सुनामी (चेन्नई), औद्योगिक गैस रिसाव (भोपाल), कोविड–19 महामारी झेली है। इन घटनाओं में अनेक लोगों ने अपनी जान गंवाई। इनसे पीड़ित व्यक्ति सालों से न्याय के लिए तरस गए। महामारी के दौरान कई प्रवासियों को शहरों से पैदल अपने–अपने गाँव लौटना पड़ा। इसका सीधा कारण था शहरों में दैनिक वेतन पर निर्भर प्रवासियों के लिए रहने, खाने की कोई भी व्यवस्था राज्य अथवा केन्द्रीय सरकार द्वारा नहीं की गई। एक विकसित शहर को इन आपदाओं को बेहतर ढंग से संभालना अपेक्षित था। यह सब विषम परिस्थितियाँ एक ही ओर इशारा कर रही हैं– शहरों की व्यवस्था में एक प्रगाढ़ परिवर्तन की आवश्यकता। ऐसा नहीं है की शहरों के विकास पर विचार के लिए चिंतकों या नौकरशाहों की कमी रही हो। चलिए, भारतीय परिवेश में एक ऐसे शहर के बारे में जानें जहां भारत के अग्रणी चिंतक, वास्तुकार, योजनाकर्ताओं ने अपनी स्याही और शक्तियों का भरपूर प्रयोग किया।

नवी मुंबई, मुंबई (महाराष्ट्र) के पश्चिमी किनारे पर बसा एक पूर्ण रूप से विकसित शहर है, इसे मुंबई का जुड़वा शहर भी कहा जाता है। यह

दुनिया का सबसे बड़ा नियोजित शहर है। पर्यावरणीय सुरक्षा के साथ–साथ जन– जीवनोपयोगी सुविधायों को ध्यान में रखकर 1972 में इस शहर की आधारशिला रखी गई थी। यह योजना संपन्नता से काढ़ा गया सपना था। सपना जिम्मेदारी का बोध कराता है परंतु यह सपना राजनीति और सामाजिक यथार्थ के नीचे दब गया। इसका क्षेत्रफल 163 स्क्वायर किलोमीटर में फैला हुआ है एवं आबादी अंतिम जन गणना के अनुसार 11,19,488 है। यह दुनिया का सबसे बड़ा योजनाबद्ध ढंग से बनाया गया शहर है। आजादी के 25 वर्ष के बाद औद्योगिक एवं व्यवसायिक विकास के साथ मुंबई की बढ़ती आबादी ने वहाँ के स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को बुरी तरह से प्रभावित किया। अब समस्या थी बढ़ती आबादी के रहने की व्यवस्था, क्योंकि मुंबई का क्षेत्रफल सीमित था। 1966 में महाराष्ट्र क्षेत्रीय और नगर योजना अधिनियम पारित हुआ जिसे 1967 में पूर्णतया लागू किया गया। नवी मुम्बई को बनाने की शुरुआत 1971 में हुई। इस योजना में प्रमुख नगर नियोजक एवं वास्तुकार चार्ल्स कोरेया, शिरीष पटेल, प्रवीण मेहता और आर. के. झा सम्मिलित थे।

इस शहर को बनाने का मुख्य उद्देश्य था रियायती मूल्य पर सुविधाजनक आवास, जरूरतमंदों को उपलब्ध कराना और शहर में बढ़ती झुग्गी–झोपड़ियों को विस्थापित करना। परंतु यह हो ना सका आज भी झोपड़पट्टी बढ़ती ही जा रही हैं। झुग्गी–झोपड़ियों का बढ़ना समाज की पूंजीवादी व्यवस्था का एक चिन्ह है। मुंबई शहर में जमीन का सबसे बड़ा हिस्सा पूंजीवादी और अमीरों के हाथों में है, ऐसे में यह स्वाभाविक है कि कागज पर लकीरों से रचे सपने सामाजिक और भौतिक वास्तविकता के सागर में लीन हो जाएंगे।

4. योजना / प्रक्रिया– भारतीय परिवेश में शहरी योजनाकर्ता और विचारक–

मुल्क राज आनंद (21 दिसम्बर 1905–28 सितंबर 2004)– एक महान गाँधीवादी विचारक एवं लेखक जो कार्ल मार्क्स के दर्शन से अत्याधिक प्रभावित थे, उनके अनुसार भारतीयता का सार गाँवों में है। गाँवों एवं ग्रामीणों की उन्नति से राष्ट्र का विकास संभव है।
कॉरबुसीएर (6 अक्टूबर 1887–27 अगस्त 1965)– चंडीगढ़ शहर की वस्तु शिल्पकार का गौरव, नगर नियोजक एवं चित्रकार। सामाजिक एवं यांत्रिक कार्यकलापों के समायोजन से तर्क संगत शहरी विकास और कुशल शहरों का निर्माण हो सकता है।
पैट्रिक गेडडेस (2 अक्टूबर 1854–17 अप्रैल 1932)– आधुनिक शहर का निर्माण आपस में जुड़े हुए कभी अलग न हो सकने वाले आकारों एवं प्रकारों का संयोजन हो– जिसके द्वारा हम एक पुष्प की कल्पना कर सकते हैं– जिसकी हर पंखुड़ी अलग होते हुए भी सम्पूर्ण है। पैट्रिक के विचार भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में असफल रहे, बावजूद वे भारतीय परंपराओं एवं जरुरतमन्द गरीबों के प्रति संवेदनशील थे। भूमिगत पानी के पाइप, मल प्रवाह पद्धति एवं सीधी सड़कों के समर्थक, अधिक आधुनिकता के खिलाफ।
राधाकमल मुखर्जी (समाजशास्त्री एवं विचारक, 1889–1968)– सामाजिक पारिस्थितिकी एक अच्छा विकल्प है आज के सतत औद्योगीकरण के प्रलय को रोकने के लिए। भारत की संस्कृति स्वयं में अनेक मानवीय मूल्यों को समेटे हुए है अतः जब पारिस्थितिकी की बात उठती है तो वह एक ही विषय न होकर अनेक धाराओ जैसे– सामाजिक, आर्थिक और राजनीति में व्याप्त दिखता है। विश्व में मानव आवासीय बस्तियों का उदय कृषि सम्पन्न स्थानों में हुआ। बाद में ये स्थान उपलब्ध यातायात साधनों द्वारा व्यापारिक केंद्र बने। अतः मानव विकास में कृषि का विशेष महत्व है।
बारबरा वार्ड(अर्थशास्त्री एवं लेखक, 1914–1981)– के अनुसार "दुनिया भर के मानवीय अनुभवों को पृथक – पृथक क्षेत्रों में बाटकर देखने के बजाय उन क्षेत्रों के परस्पर निर्भरता वाले एक वृहत जाल के रूप में देखना चाहिए। मानवीय बस्तियों के अध्ययन में ऐसे एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है।''
अंटोनियो गुतर्रास (यू .एन. सेक्रेटरी जनरल)– कोविड–19 आपदा ने विश्व को एक अवसर दिया समान और संपोषणीय विकास का। उनके अनुसार "मानव के समुचित विकास के लिए शिक्षा और अंकीय तकनीकी क्षेत्र को प्राथमिकता देना जरूरी है।

भारत में सार्वजनिक आवासीय बस्तियों के निर्माण का कार्यक्रम 1960 में प्रारम्भ हुआ, जब भारत पाकिस्तान विभाजन के दौरान शरणार्थियों को बसाया जा रहा था। इस समय लगभग 5 लाख परिवारों को उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों में बसाया गया। स्वतंत्रता के बाद देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 नेहरू के नेतृत्व में बनी पंचवर्षीय योजना के तहत ग्रामीण आवासीय ऋण योजना का संचालन हुआ, जिसमें कोऑपरेटिव सोसाइटी द्वारा रु. 5000 प्रति इकाई प्रदान करने का प्रावधान था। समय–समय पर इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, मान्यवर कांशीराम योजनाओं का संचालन हुआ, जिसमें ग्रामीण एवं शहरी गरीबी रेखा में जीवन व्यतीत करने वाले जन, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति को आवश्यक सुविधाओं सहित भवन उपलब्ध करवाने की प्रक्रिया पर ध्यान दिया गया। आज के संदर्भ में देखें तो प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना विशेषतः मजदूरों और शहरी गरीबों के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित की गई है। इन सभी कोशिशों के बावजूद शहरों में बढ़ती आबादी को समुचित आवास व्यवस्था नहीं मिल पा रही है, जिसका प्रभाव शहरों की जीवन शैली पर बड़ी बुरी तरह पड़ रहा है जैसे– जल आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति एवं वितरण, यातायात व्यवस्था प्रमुख हैं। समय रहते ही इन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उचित सुधार की आवश्यकता है।

आवासीय बस्तियों के विकास का उद्देश्य मानव की सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता को उन्नतशील बनाना है। यह अमीर–गरीब, शहरी–ग्रामीण वर्ग का विभेद समाप्त हो जाता हैं। इस तरह का विकास तभी संभव है,जब वैश्विक तौर पर सरकारी, निजी एवं सह संस्थाओं का तालमेल तकनीकी स्तर पर हो, आर्थिक सहायता देने वाली संस्थाएं स्थानीय समूहों जैसे महिलाएं, बुजुर्ग, विकलांग और आदिवासी वर्ग से जुड़े,उनकी समस्याओं को सुने और समझे। इन सभी मूलभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखकर ही राष्ट्र एवं विश्व में

मानवकी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकेगा और मानव बस्तियों का समुचित विकास हो पाएगा। बस्तियों के समग्र विकास के लिए स्वच्छता, जल आपूर्ति, जल निकास, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सतत् ऊर्जा वितरण यातायात एवं परिवहन प्रणाली के साथ ही साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर जोर दिया जाएं। इसके अलावा प्राकृतिक आपदाओं से (जैसे– सुनामी, बाढ़, भूकंप, आगजनी आदि) से निपटने का भी इंतजाम हो।

चित्र–1: सतत् विकास के मुख्य अवयव

मानव, सतत् विकास का केंद्र है, उसे अधिकार है स्वस्थ जीवन शैली जीने का एवं प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का। इसके द्वारा ही प्रकृति का संरक्षण संभव है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रकृति संरक्षण में ही मानव का विकास सन्निहित है। पर्याप्त आवासीय स्थान मानव का मौलिक अधिकार है तथापि वर्तमान मौजूदा आकलन के अनुसार आज लगभग 1 अरब व्यक्तियों के पास सुरक्षित आवास नहीं है। यदि समय रहते इस समस्या का समाधान न हुआ तो भविष्य में स्थिति और खराब हो जाएगी।

गरीबी रेखा में जीवन गुजारते शहरी एवं ग्रामीण जनों को पर्याप्त आवासीय सुविधाएं प्रदान करवाना आज सरकार एवं निजी संस्थाओं का प्राथमिक उद्देश्य बन गया है। इसकी प्राप्ति में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, वित्तीय संस्थाओं की भागीदारी एवं सहयोग जरूरी है, तभी भारत जैसा विकासशील देश गरीब और बेघर समुदाय को आवास प्रदान कर पाएगा। विश्व के सभी राष्ट्रों को नियमबद्ध तरीके से राष्ट्रीय आवासीय रणनीति को अपनाकर लक्ष्य निर्धारित कार्यक्रमों का संपादन करना होगा। वित्तीय सहायता प्रदान कर सुविधाजनक भूमि अधिग्रहण द्वारा बेघरों को उचित दर पर सस्ती आवासीय सुविधा प्रदान कर सकते है। अब सतत् शहरी विकास की बात करें तो उनके अनेक मापदंड हैं जैसे पीने के साफ पानी की उपलब्धता, वातावरणीय वायु की गुणवत्ता एवं पर्यावरणीय अनुकूल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली आदि। अधिकांशतः आज जो घरेलू ऊर्जा उत्पन्न की जा रही है, उसका उपयोग मानव आवासीय क्षेत्र के विकास में हो रहा है। विकासशील देशों में आज की जरूरतों में ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाकर उसके मूल्य को जन सुलभ बनाना अति आवश्यक हो गया है, जिससे औद्योगिक विकास के साथ ही साथ मानव के जीवन स्तर में भी सुधार किया जा सके। ऐसे यातायात–परिवहन के साधनों का विकास करना होगा जो पर्यावरणीय दृष्टि से दक्ष हो। यात्रियों में यात्रागत सावधानियों के प्रति जागरूकता पैदा करनी है। यह सभी बातें सरकारी, सहकारी, निजी संस्थाओं एवं संचार माध्यम के द्वारा प्रसारित करनी होगी, जिसमें हरित ईंधन, सी.एन.जी., यांत्रिक यातायातों के प्रयोग आदि प्रमुख हैं।

प्राकृतिक आपदा एवं महामारी से प्रमुख रूप से कम आय वर्ग की जीवन हानि, व्यापारिक क्रिया कलापों का विघटन एवं शहरी विकास बाधित होता है। आपात कालीन स्थिति में जीवन सुरक्षा एवं उसके द्वारा हुई हानि से निपटना एकीकृत विकास योजना का आवश्यक अंग है। जिसमें भूकंपरोधी आवास जो लकड़ी द्वारा बनाए जाते हैं, परंतु ये तेज हवाओं और तूफान से असुरक्षित हैं। अतः मानव बस्ती के विकास प्रक्रिया में सर्वप्रथम जोखिम के कारणों को जानना एवं असुरक्षा से बचाव जैसे मुद्दों को अग्रणी रखा जाना चाहिए। मानव आवासीय बस्ती के विकास की परियोजना और प्रबंधन में कानूनी, आर्थिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को आवश्यक रूप से जोड़ा जाना चाहिए। इन सभी जोखिमों के बारे में जागरूकता एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था भी स्थानीय समुदाय के लिए जरूरी है।

अतः मानव आवासीय योजनाओं के विकास में प्राकृतिक आपदा प्रबंधन एक आवश्यक अंग है। अनेकानेक शोध एवं अध्ययनों के बावजूद भी योजनाकारों और निर्माणकर्ताओं ने पिछली घटनाओं से सबक नहीं लिया। नियम और कानून की अवहेलना, भ्रष्टाचार, स्वनिहित स्वार्थ, सरकारी नीतियों का सही अनुपालन नहीं हो रहा है जो प्राचीन मानव बस्तियों के विनाश का कारण बन रहा है। आवासीय बस्तियों का निर्माण स्थानीय उपलब्ध वस्तुओं द्वारा किया जाना निर्धारित होना चाहिए। ऐसा करने से किफायती भवन तैयार होंगे। साथ ही अगर स्थानीय मजदूरों द्वारा निर्माण होगा तो उस समुदाय को रोजगार के अवसर भी प्रमुखता से मिलेंगे, जो उनके जीवन यापन में सार्थक सिद्ध

होगा। इस सहभागिता से मानव जीवन में सुधार आने के साथ–साथ प्रकृति और पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।
लेख के इस भाग के निष्कर्ष में कुछ बिंदुओं को संक्षिप्त में नीचे प्रस्तुत किया गया है–

4. **शहरी आवासीय कार्यनीति**– शहरी आवास–विकास योजना को प्राथमिकता देते हुए, संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम ने एक रूपरेखा तैयार की है जिसके प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित है :–
शहरी गरीबों के लिए आवासीय व्यवस्था।
मूलभूत आवश्यकताओं जैसे– शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की आपूर्ति, साफ पेयजल वितरण प्रणाली और स्वच्छता का प्रावधान।
सरकारी सुविधाओं एवं अन्य जरूरतों तक महिलाओं की पहुँच।
वैकल्पिक ऊर्जा एवं यातायात साधनों को उन्नतिशील बनाना और उसका उचित उपयोग।
वायु प्रदूषण में कमी लाना।

5. **सरकारी प्रयास**– स्मार्ट सिटी अवधारणा को अपनाया गया। मेट्रो रेल, मोनो रेल और बस ट्रांसिट जैसे सार्वजनिक गलियारों का स्थापन एवं विस्तारीकरण। उन्नत कृषि एवं ग्रामीण विकास के द्वारा किसानों के हित और ग्रामीणों को गाँव न छोड़ कर जाने के लिए प्रोत्साहित करना। प्रधानमंत्री आवास योजना का निस्तारण। शहर रूपांतरण एवं कायाकल्प के लिए अटल मिशन यानि अमृत योजना के अंतर्गत शहरों की आधारभूत संरचना को मजबूत करना।

6. **नेटवर्क सोसाइटी की अवधारणा**– नेटवर्क सोसाइटी की चर्चा शहरीकरण एवं मानव आवास के संदर्भ में करना प्रासंगिक है। स्मार्ट सिटी के रूप में ही भारत का विकास संभव हैं। शहर की भौगोलिक सीमा का जितना विस्तारण होगा, हमें नए नेटवर्क बनाने की उतनी आवश्यकता होगी। जिससे सुविधाओं एवं सेवाओं का समय सीमा के साथ तार्किक उपयोग हो सके, कंप्यूटर आधारित आंकिक संचार व्यवस्था आधुनिक समाज का जरूरी अंग हो गया है। लेकिन इसके साथ यह भी संभावना है कि निर्धनता, साक्षरता की निम्न दर, असमानता एवं कंप्यूटर के उपयोग को न जानने वाले लोगों के लिए शहरी आवास समस्याजनक होगा। क्या स्मार्ट सिटी का भव्य स्वप्न संकीर्ण हो जायेगा? क्योंकि हाशिये पर रहने वाला निम्न वर्ग ऐसे शहरों के लिये उचित होगा?

7. **चर्चा / विचार विमर्श**– दीर्घकालिक / टिकाऊ आवास तैयार करने के लिए योजना के परिप्रेक्ष्य में मुख्यतः तीन स्तम्भ हैं– मनोदृष्टि, नजरिया एवं पद्धति। सामाजिक न्याय, उत्पादन एवं उपयोग में संतुलन, आर्थिक एवं सामाजिक नवीनता, सार्वजनिक भागेदारी, लैंगिक समानता भी योजना के आवश्यक अंग हैं। मानव आवासों में मजबूती तभी आयेगी जब आंतरिक संरचना एवं बाहरी संघटन पर ध्यान देते हुए आवंटन निष्पक्ष हो। यहां पर नवीन तकनीकों का तात्कालिक उपयोग में लाया जाना तर्कसंगत है। इन सुविधाओं का निजीकरण और असीमित उपयोग निंदनीय है। कुछ कठोर नियम कानून एवं उनका अनुपालन सुनिश्चित होने पर ही हम प्राकृतिक सम्पदा का अनावश्यक संदोहन रोक पाएंगे, शहरी एवं ग्रामीण समुदाय में समानता ला पाएंगे, यदि ऐसा नहीं हुआ तो सामाजिक असमानता बनी रहेगी।

8. **परिणाम**– इन सभी तथ्यों का अनुप्रयोग किसी भी मानव निवास को स्पष्ट रूप से रहने योग्य बेहतर स्थान बनाएगी। यद्यपि आज विश्व में शायद ही ऐसा कोई भी शहर अथवा गांव है जो इन सभी विशेषताओं से सम्पन्न हो, या फिर पूर्णतया सतत् उपयोग की सुविधाओं से सुसज्जित हो। मानव जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में प्रमुखतः आवास के निर्माण में सभी सुविधाओं से युक्त, आधारभूत संरचना एवं आधिकारिक वर्ग में समर्पण– सहभागिता ही वहाँ रहने वाला समुदाय को सुख और समृद्धि प्रदान कर सकती है।

9. **निष्कर्ष**– पारिस्थितिकी तंत्र में किसी भी ऐसी प्राकृतिक वस्तु की आवश्यकता जो धीरे–धीरे समाप्त हो रही हो उसका कुशल प्रबंधन एवं उपयोग ही उसे टिकाऊ एवं पोषणीय बनाता है। विकसित देशों में इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बड़ी निर्दयता से हो रहा है, जिससे वातावरण नकारात्मक तरीके से प्रभावित हो रहा है। इसी श्रेणी में शहर में मानव बस्तियों का उदय एक बड़ी समस्या बन गई है, क्योंकि इसके लिए कच्चे माल एवं आर्थिक सहयोग की जरूरत है, खासतौर पर विकासशील देशों जिसमें भारत भी शामिल है, जहाँ मानव अधिकारों का उचित वितरण नहीं हो पा रहा है। आज जो ज्ञात आंकड़ा है उसके अनुसार लगभग केवल 5–6 प्रतिशत सहायता राष्ट्र सरकार द्वारा इन आवासीय बस्तियों को दी जा रही है, जिसमें सामाजिक सुरक्षा एवं मानव कल्याण भी शामिल है।

दीर्घकालिक विकास का तात्पर्य विशेष रूप से यदि आवासीय बस्ती की बात करें तो सुरक्षा एवं समानता पर ध्यान जाता है। यहाँ पर प्रकृति एवं सामाजिक असंतुलन जैसे– प्राकृतिक आपदा, आर्थिक एवं सामाजिक अस्थिरता, क्योंकि जलवायु परिवर्तन सतत टिकाऊ विकास के आड़े आता है। जलवायु परिवर्तन मानव जीवन और उनके जीवनोपयोगी विकास के संसाधनों पर अत्यधिक प्रभावी है। यह निर्भर करता है उसकी भौगोलिक स्थिति पर कि प्रभाव सकारात्मक होगा या नकारात्मक। अंततः मानव आवासीय सुरक्षा एवं पर्यावरणीय संरक्षण का निराकरण जनोपयोगी योजनाओं के निर्माण एवं उसका सही ढंग से अनुपालन पर निर्भर करता है। यहाँ आर्थिक, सामाजिक पक्षों के अतिरिक्त भावनात्मक पक्ष भी उल्लेखनीय है। इस अध्ययन द्वारा हम ज्ञात कर पाएंगे की आज किन परिस्थितियों में मानव पारंपरिक गाँवों में

रह रहा है और आने वाले समय में हो रहे शहरीकरण का कुशल प्रबंधन कैसे किया जाए जिससे मानव अधिकारों का हनन न हो और उन्हें समग्र रूप से आवासित / व्यवस्थित किया जा सके।

सन्दर्भ

1. "सिक्स्थ एसेस्मेंट रिपोर्ट ऑफ इंटेरगवर्न्मेन्टल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज" https://www.ipcc.ch/report/ar6/wg1/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया
2. "क्लिमेट चेंज वाइड्स्प्रेड, रैपिड एण्ड इंटेनसिफ़ाएड" –IPCC जेनेवा अगस्त 2021.
3. "प्लैनिंग कमिशन", गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, फाइव ईयर प्लान https://niti.gov.in/planningcommission.gov.in/docs/plans/planrel/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया
4. "द इंडस वैली सिवलिज़ैशन."–https://en.wikipedia.org/wiki/Indus_Valley_Civilisation/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया।
5. चंद्रमौली, सी0 (2011) भारत की जनगणना। अनंतिम जनसंख्या योग, 2011 का पेपर 1, भारत, श्रृंखला 1. महापंजीयक और जनगणना आयुक्त का कार्यालय, पृ0 188।
6. "पर्सेन्टज ऑफ पापुलेशन एण्ड सिटीज़ रैंकिंग" https://www.citypopulation.de/en/world/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया।
7. 2020 में महाद्वीप के अनुसार शहरीकरण की डिग्री (कुल जनसंख्या में शहरी आबादी का प्रतिशत) https://www.statista.com/statistics/270860/urbanization-by-continent/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया
8. ह्यूमन सेटल्मन्ट्स एण्ड देअर प्लेस इन डेवलपमेंटhttps://odi.org/en/publications/human-settlements-and their-place-in-development/ 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया
9. मुंबई फ़ेबल्स, ज्ञान प्रकाश, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010
10. बॉम्बे प्लैनिंग एण्ड ड्रीमिंग – मार्ग (बॉम्बे जर्नल ऑफ आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर) वॉल्यूम 18 अंक तीन – जून 1965
11. मुंशी, इंदिरा एवं पैट्रिक गेडेस (2000) समाजशास्त्री, पर्यावरणविद् और नगर योजनाकार, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, मु0पृ0 485–491।
12. सक्सेना, आर0 एन0 (1968) मृत्युलेख, राधा कमल मुखर्जी (1889–1968)
13. मोहम्मद अल–असद, द सस्टेनेबल ह्यूमन सेटलमेंट, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ बिल्ट एनवायरनमेंट, https://www.csbe.org/the-sustainable-human-development 13 सितंबर 2021 को एक्सेस किया गया।
14. हेन्स, ल्यूक(2005) पर्यावरण और विकास पर रियो घोषणा, क्षेत्रीय सतत विकास समीक्षा– अफ्रीका, ऑक्सफोर्ड, यूके, इओल्स पब्लिशर्स
15. हैबिटेट, यू0एन0 (1996) निवास स्थान एजेंडा लक्ष्य और सिद्धांत, प्रतिबद्धताएं और वैश्विक कार्य योजना, इस्तांबुल – संयुक्त राष्ट्र पर्यावास